९२. विचार क्रम

१४-०७-२०१३

विचार मानव परम्परा में नियति सहज विधि से पाया गया वैभव है | अथवा विकास क्रम, जागृति क्रम में पाया गया वैभव है | विकास क्रम सेजीवन विकास रूप में, जागृति क्रम विधि से जीवों से अच्छा जीने का प्रमाण में ये दोनों मानव परम्परा को प्राप्त हैं | जीवों से अच्छा जीने की विधि से आहार, आवास, अलंकार में; जीवों से भिन्न दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन विधि; दोनों विधि से भिन्न होकर के जी पाया है | यही सकारात्मक भाग है | ये विचार के अधीन है | विचार परम्परा विधि से ही यह छः प्रकार से जीवों से अधिक श्रेष्ठता को प्राप्त किया है | यह मानव परम्परा को प्राप्त वैभव है | अब जागृति प्रमाणित होना शेष है | इसी पक्ष में विचार होना स्वाभाविक है | इसी में अनुसंधान विधि से, सर्वाधिक लोगों में शोध विधि से प्राप्त होना सहज है | मानव सदा से विचार किया है | जंगल युग से अत्याधुनिक युगतक, पत्ता से लेकर मिसाइल तक शोध, अनुसंधान किया है | जिसके फलस्वरूप में छः प्रकार से जीवों से अच्छा जीना हो गया | अब जागृति को प्रमाणित करना शेष है और आवश्यकता है | आवश्यकता इस प्रकार से आ गया है कि मानव पत्ते, पत्थर, डंडा से लेकर मिसाइल तक जो अनुसंधान किया है, यह पूरा का पूरा संघर्ष और युद्ध के लिये सम्पन्न हुआ |

संघर्ष और युद्ध मानव विरोधी हैं | मानव परम्परा के साथ मैत्री होना आवश्यक है | मदद होना आवश्यक है, परस्पर उपयोगी होना आवश्यक है कि नहीं? इसको सोचने पर पता लगता है कि आवश्यक है | इसी के आधार पर विकल्प प्रस्तुत हुआ | विकल्प के मूल में अनुसंधान रहा है | यह अनुसंधान आदर्शवादी विधि से रहा | सारा वेद, वेदांग विचार आदर्शवाद में गण्य है | यह अनुसंधान हुआ है आगम तंत्रोपासना विधि से | आगम तंत्र वेदांग माना जाता है | वेद में कर्म, उपासना, ज्ञान रूप में समर्थन दिया है | उपासना के पक्ष में आगम तंत्र उपासना है | ज्ञान, कर्म के आधार पर यह प्रस्ताव रखा है | योग विधि अलग से है | ये दोनों भागों को देखने पर पता लगा क्रिया शक्ति, इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति जागृत होने की बात कहा है | इसी आश्वासन के आधार पर मैं स्वयं आगमतन्त्रोपासना विधि से प्रयोग किया | आगमतन्त्रोपासना विधि से समाधि, संयमपूर्वक पूरा विकल्प को पाया | विकल्प के अनुसार मानव अध्ययन पूर्वक पारंगत होना, पारंगत होने का मतलब अनुभव होना है | अनुभव होने का प्रमाण आचरण में होता है | यह पूरा का पूरा भाग मेरे द्वारा आचरण कर देखा गया है | इसमें कोई शंका नहीं, तब इसको विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया है |

सर्वप्रथम अध्ययन ही है | अध्ययन का तात्पर्य साक्षात्कार होने से, अर्थ बोध होने से है | यह मनन पूर्वक सफल होता है | मनन, अपने में न्याय धर्म सत्य को साधने का एक अभ्यास है | इस ढंग से अध्ययन से पहले अनुमान, अध्ययन पूर्वक निश्चयन, निश्चयन से अवधारणा और परिपुष्ट अनुमान, उसके बाद अनुभव | विचार पुष्टि से अनुभव | अनुभव के बाद विचार पुष्टि होता है, उसके बाद आचरण में आता है | आचरण में आना ही प्रमाण है | आचरण ही प्रमाण है, क्योंकि मनुष्येतर तीनों अवस्था में आचरण विधि से पहचानते हैं | यह मानव परम्परा में अभ्यस्त हो चुका है | इसमें कोई शंका नहीं | सर्वदेश काल में कुत्ते का आचरण पर विश्वास, बिल्ली के आचरण पर विश्वास, गाय के आचरण पर विश्वास, बाघ के आचरण पर विश्वास किया है | इन सबका संरक्षण कार्य में लगा है | मानव का संरक्षण मानव से नहीं हो पायाक्योंकि मानव का आचरण स्थिर नहीं हुआ |

आचरण स्थिर हुए बिना संरक्षण होना सम्भव नहीं है | इन सब बातों को ध्यान में रखते हुये विकल्प को प्रकट किया है | प्रयोग विधि से जब प्रस्तुत हुआ, विभिन्न स्तरीय समुदाय इसको देखा है | शिक्षा विधि से भी देखा, उपयोगी माना गया | अनुभव विधि से, प्रमाण विधि से अभी शेष है | इन सभी अनुभवों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि विकल्प का अध्ययन आवश्यक है | पठन शब्द से होता है | शब्द का अर्थों में अध्ययन है | अर्थ का आचरण हो सकता है | ये हमने देखा है | अर्थ का आचरण ही प्रमाण है | शब्दों का प्रमाण के रूप में जो आहार, आवास, अलंकार होता है; दूरगमन, दूरश्रवण, दूरदर्शन होता है; यह जीवों से अच्छा जीने के लिये सार्थक हुआ न कि मानव संतुष्टि के लिये | मानव संतुष्टि तभी होता है जब शब्द के अर्थों को जी पाते हैं | मानव का आचरण शब्द से एकत्रित नहीं हो पाया, शब्द के अर्थों में एकत्रित होता है | मुझमें जब आचरण में आ गया, सब में आचरण में आने में विश्वास किया तभी विकल्प रूप में प्रस्तुत किया | यह सब मानव का पुण्य से प्राप्त होने के आधार पर मानव को अर्पित कर दिया |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

-ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)